तृतीय अध्याय

शिक्षा एवं पत्रकारिता का अन्योन्याश्रित संबंध–विभिन्न पहलू

शिक्षा एवं पत्रकारिता का संबंध घनिष्ट है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए पत्रकारिता एक प्रमुख साधन है।शिक्षा में जो भी नये–आयाम हैं उसे प्रस्तुत करने के लिए पत्रकारिता एक साधन मात्र ही नहीं बल्कि एक मार्ग दर्शक के रूप में है। पत्रकारिता को समाज के प्रत्येक स्पंदन की माप बता सकते हैं। उसी को विकृतियों की प्रस्तोता आदर्श एवं सुधार लिए सहज उपचार भी माना जाता है। पत्रकारिता जहाँ शिक्षा के प्रचार–प्रसार का माध्यम है, उसमें उत्पन्न होने वाली जागृति का पर्याय है, इसमें उठ रही ज्वालामुखियों का अविरल प्रवाह भी है। सुशिक्षित गतिशील समाज की स्थापना एवं श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की स्थापना में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण स्थान है।

3.1 शिक्षा के प्राण तत्व हैं – ज्ञान, शिष्टता, व्यवहारिकता, संवाद एवं संप्रेषण

वर्तमान युग में लोगों के बीच बढ़ती दूरियाँ, समय का अभाव, व्यस्त जीवन एवं व्यावसायिक सफलता की आकांक्षा के कारण प्रत्येक मनुष्य संप्रेषण–प्रक्रिया एवं इसके विभिन्न साधनों के द्वारा शिक्षा का महत्व कल्प वृक्ष के समान बढ़ने लगा। शिक्षा को सुचारु रूप से संचालित करने में संप्रेषण प्रक्रिया एक मुख्य अंग है और इसे तीव्र करना भी बहुत आवश्यक है अतः संप्रेषण साधनों का महत्व भी बढ़ा है । शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की संवाहिका होती है। ज्ञान, संवाद, शिष्टता, व्यावहारिकता एवं संप्रेषण के द्वारा व्यष्टि का विकास समष्टि के विकास में प्रतिफलित होता है। व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमताओं द्वारा शिक्षा का उचित संदोहन, उसकी अपार शक्ति का लोकहित सामाजिकरण एवं व्यक्ति के पारस्परिक ज्ञान–विनिमय से व्यक्ति को सर्वांगीणरूपण विकासोन्मुख करना, तथा

उसके माध्यम से लोगों को अधिकाधिक सजग, प्रबुद्ध एवं मानव सेवा की ओर उन्मुख करना शिक्षा की वांछित भूमिका की परिधि के परमावश्यक तत्व है।

'शिक्षा' बौद्धिक एवं मानसिक विकास के लिए, एक अति आवश्यक तत्व है। जिन उपदेशों के द्वारा किसी व्यक्ति का आध्यात्मिक, मानसिक, बौद्धिक, शारिरिक तथा अन्य प्रकार का विकास होता है, उसमें विनम्रता, सहनशीलता के गुण आते हो, उस प्रशिक्षण का नाम है '' शिक्षा''। जिस प्रणाली द्वारा अध्ययन–अध्यापन की क्रिया संचालित होती है, उसका नाम है '' शिक्षा पद्धति''। व्यक्ति के विकास के लिए शिक्षा एक प्रबल साधन है। जीवन में सफलता की कुंजी यदि कहीं है तो शिक्षा के पास है। लोग कभी–कभी साक्षरता को भी शिक्षा की श्रेणी में गिनने लगते हैं। ''शिक्षा'' ज्ञान या विद्या की प्राप्ति का नाम है परन्तु ज्ञान और विद्या में भी हम थोड़ा सा अन्तर पाते हैं। 'ज्ञान' सम्यक् बोध का और विद्या ज्ञान–विज्ञान जैसे किसी विशेष विषय के विशेष ज्ञान का नाम है। अर्थात् पूर्णता के मंतव्य को ग्रहण करनेवाली मनोवृत्ति का नाम 'ज्ञान' है। जिसकी भूमिका अन्तःकरण को माना जाता है। ज्ञान द्वारा जो कुछ प्राप्त किया जाता है, उसका नाम विद्या है। ज्ञान के क्षेत्र अनन्त हैं परन्तु सच्चा ज्ञान वह है,जो हितकारी और कल्याणकारी हो। इसका मूलाधार शिक्षा ही है।

संसार में जितनी प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सबसे बढ़कर है। निराली शिक्षा वही है जिसके द्वारा साहस का विकास हो, गुणों में वृद्धि हो और ऊँचे उद्देश्यों के प्रति लगन जागे।

शिक्षा का क्षेत्र भी संप्रेषण से अछूता नहीं रहा है। संप्रेषण से ही व्यक्ति का बौद्धिक विकास तथा चरित्र निर्माण संभव होता है। शिक्षा के माध्यम से जीवन कलामय होता है और जीवन के सभी चरणों में उपयुक्त योग्यता का विकास होता है। प्रत्येक क्षेत्र में नवीन व गहनतम ज्ञान विद्यार्थियों को पहुँचाने में संप्रेषण–प्रक्रिया महत्वपूर्ण है। शिक्षा की सफलता का आधार आज प्रभावी संप्रेषण

बन गया है। ''शिक्षा सबके लिए'' संप्रत्यय की कार्यानवयन के दौर में संप्रेषण का महत्व दिन प्रतिदिन और भी बढ़ता जा रहा है। शैक्षिक प्रशासन, शैक्षिक प्रक्रिया, शिक्षा की सफलता ये सभी शिक्षा प्रणाली के घटक हैं और इन सभी घटकों को एक साथ जोड़कर रखनेवाला सूत्र है संप्रेषण। इसके आधार पर ही शिक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

संचार माध्यमों के द्वारा शिक्षा के प्रचार–प्रसार में परिवर्तन की क्षमता अधिक है और ये श्रोताओं में स्वाभाविक रुचि पैदा कर देते हैं। स्थानगत आकर्षण, देशज प्रकृति तथा सांस्कृतिक अनुरूपता जैसी कुछ विशेषताओं ने संचार माध्यमों को सभी जनता के बीच महत्वपूर्ण , अनूठा और लोकप्रिय बना दिया है। इसे अधिक प्रभावी बनने के लिए –

- एक संगठन का निर्माण करना चाहिए जिससे हर वर्ष देशभर में करीब 40 हजार कार्यक्रम प्रस्तुत करें जिनके जरिए करीब 10,000 कलाकार से अधिक देशभर में नियमित रूप से कार्यक्रम प्रस्तुत होने चाहिए। ऐसे करने से शिक्षा का प्रचार–पसार आकर्षक और रूचिपूर्व भी बन जाता है।
- महत्वपूर्ण विषयों पर सभी आधुनिक प्रकाश, ध्वनि और मंच तकनीकों का इस्तेमाल करके भव्य ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम प्रस्तुत करने चाहिए।
- देश के लोगों में शिक्षा के साथ ही राष्ट्रीय एकता,सांप्रदायिक सद्भाव, स्वतंत्रता आंदोलन, स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दों, अन्य विकास कार्यक्रमों आदि के बारे में जागरुकता पैदा करनी चाहिए।

इससे संगठन लोगों के साथ तत्काल तादात्मय बनाने और नए–नए विचारों को प्रभावशाली ढंग से अपने कार्यक्रमों में समाविष्ट करने की बेहतर स्थिति में है। विभिन्न मंचन स्वरूप के अतिरिक्त ध्वनि, प्रकाश का उपयोग करके श्रोताओं का ध्यान राष्ट्रीय जीवन और विभिन्न पहलुओं की ओर खींचता है।

यदि लोगों के जीवन में सामाजिक बदलाव लाने के लिए संचार का सही मायने में उपयोग करना है तो उसका आधार समुदाय की मान्यताओं और मूल्यों पर टिका होना चाहिए। साथ ही वह सम्मानीय और विश्वसनीय होना चाहिए। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसका प्रमुख उद्देश्य सक्षम नागरिकों का विकास करना है तथा समाज के आदर्शों एवं मूल्यों को आत्मसात् करना है। शिक्षा सामाजिक परम्पराओं आदर्शों, मान्यताओं एवं मूल्यों को भावी पीढ़ी तक पहुँचाती है, जिसमें संस्कृति सुरक्षित बनी रहती हैं। शिक्षा का कार्य केवल संस्कृति की सुरक्षा ही नहीं है वरन् उसका विकास करना भी है, नयी पीढ़ी को नये उपयोगी मूल्य भी देने हैं और समाज की पुनर्रचना में सहायक बनना है। प्रजातंत्र की सफलता हेतु बालकों के स्वतंत्र, सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक चिन्तन का विकास करना है।

शिक्षा केवल ज्ञान–दान ही नहीं करती, वह संस्कार और सुरुचि के अंकुरों का पालन भी करती है।

रोग का निदान हो जाने पर सही दवा का निर्धारण होने, उचित पथ्य परहेज का निर्धारण होने पर भी जब तक दवा व पथ्य परहेज का उपयोग निर्धारित समय अवधि में , एक निश्चित अन्तराल में , प्रस्तावित मात्रा के अनुसार होने पर ही रोग का उपचार हो सकता है, उसी तरह शिक्षा में नैतिक मूल्यों के समावेश, अध्यात्म के पुट, धर्म के तत्वों को समाविष्ट करते हुए तदनुसार पाठ्यक्रम का निर्धारण आवश्यक माना गया है।

शिष्टता संबंधी छात्रों से अपेक्षित उपलब्धियों :

- छात्र वांछित मूल्य जैसे – ईमानदारी, दया, न्याय आदि को ग्रहण करें।
- छात्र सही और गलत में विभेद कर सके और जो सही है उसे कार्यान्वित करने का संकल्प लें।
- बुरी आदतों को सीखने से बचे।

◎ छात्र दूसरों की आवश्यकताओं और अधिकारों को स्थान दें और सभी के कल्याण में रुचि लें।

शिक्षा में संप्रेषण :

- शिक्षा के क्षेत्र में संप्रेषण एकतरफा न होकर परस्पर सतत रूप से होना चाहिए ताकि संदेश प्राप्त करनेवालों को उचित निर्णय लेने में आसानी हो।
- प्रभावी संप्रेषण में विविध साधनों/माध्यमों का उपयोग आवश्यकतानुसार होना चाहिए।संप्रेषण अभिप्रेरणादायक होना चाहिए जो शिक्षण, प्रशिक्षण, निर्देशन, अनुदेशन व मूल्यांकन प्रक्रिया में सहायक होना चाहिए।

संप्रेषण की प्रभावशीलता :

- संप्रेषण सामग्री स्पष्ट, संक्षिप्त व अपने–आप में पूर्ण होनी चाहिए।
- भाषा व शब्दों का चुनाव करते समय इनसे पड़ने वाले प्रभाव का पूर्वानुमान कर लेना चाहिए।
- संप्रेषण हेतु विशेषज्ञों से परामर्श व सहयोगियों से विचार–विमर्श करना उचित रहता है।
- संप्रेषण के द्वारा दोनों पक्षों से विचारों की अभिव्यक्ति होनी चाहिए ।

विद्यार्थी के व्यक्तित्व के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास में शिक्षा ही एक मात्र सहायक है। अध्ययन, अध्यापन प्रक्रिया एवं सहगामी प्रवृत्तियों से विद्यार्थी की मानसिक क्षमताओं का पूर्णतः विकास संभव है। इसके साथ शैक्षिक कार्य क्षेत्र में भी कुछ कार्य करना होगा।

शैक्षिक तकनीक का कार्य क्षेत्र –शैक्षिक तकनीक के कार्य क्षेत्र में निम्नलिखित प्रकरण एवं विषय वस्तु का समावेश होता है –

- शिक्षण और अधिगम प्रक्रियाओं का विश्लेषण।
- शैक्षिक लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का निर्धारण।पाठ्यक्रम निर्माण।

- शिक्षण अधिगम सामग्री का उत्पादन एवं विकास।अध्यापकीय प्रशिक्षण।
- शिक्षण अधिगम युक्तियों एवं व्यूह रचनाओं का चयन एवं विकास।
- उचित दृश्य श्रव्य सहायक सामग्री का चयन विकास एवं उपभोग।
- शिक्षा की उप–प्रणलियों के प्रभावपूर्ण उपभोग की ओर ध्यान देना।
- हार्डवेयर उपकरण एवं जन सम्पर्क माध्यमों का प्रभावपूर्ण उपभोग।
- मूलयांकन द्वारा उचित निमंत्रण एवं पृष्ठ पोषण की व्यवस्था।

निष्कर्षतः संप्रेषण में सामंजस्यता का होना अनिवार्य है। प्रभावी संप्रेषण वर्तमान शिक्षा की आधारशिला है। समूचे शिक्षा तंत्र को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रभावी संप्रेषण बहुत ज़रुरी है।

3.2 सर्वोपयोगी शिक्षा एवं पत्रकारिता :

नागरिक कार्य घटक सर्व शिक्षा अभियान के तहत महत्वपूर्ण है। इस घटक के अधीन, बड़े पैमाने पर कुल परियोजना के बजट का 33%तक का निवेश हैं । स्कूल की बुनियादी संविधाओं को बच्चों तक पहुँचाने का प्रावधान और उन्हें बनाए रखना में मदद करना, दोनों ही सर्व शिक्षा अभियान का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं। इसके अलावा भारत सरकार ने शिक्षा के विकास के लिए उन्नयन का संकल्प किया, प्रमुख रूप से संक्षेप में कुछ बिन्दु इस प्रकार हैं–

- ❖ निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा।
- ❖ शिक्षा के गुण एवं राष्ट्रीय विकास में शिक्षक का योगदान महत्वपूर्ण कारक है।
- ❖ भारतीय भाषाओं एवं साहित्य का क्रियाशील विकास शिक्षा एवं संस्कृति के विकास हेतु आवश्यक है। जब तक ऐसा नहीं होगा, लोगों की सृजनात्मक कार्यशक्ति निर्मुक्त नहीं होगी, न शिक्षा के स्तर का उन्नयन होगा, न लोगों तक ज्ञान का प्रसार होगा और बुद्धिजीवियों एवं जनसाधारण के बीच दूरी बढ़ती रहेगी। माध्यमिक स्तर पर त्रिभाषा सूत्र को स्वीकार कर प्रबलता से क्रियान्वित करें।

❖ प्रतिभा की पहचान :श्रेष्ठता के संवर्द्धन हेतु जहाँ तक सम्भव हो, अल्पायु में ही प्रतिभा की पहचान और उसके पूर्ण विकास हेतु प्रत्येक प्रोत्साहन और अवसर प्रदान करने की व्यवस्था की जावे।

❖ शैक्षिक अवसरों की समानता :शैक्षिक अवसरों के समानीकरण हेतु अनवरत प्रयास किया जायें। प्रादेशिक असन्तुलन को ठीक किया जाय, सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता हेतु शिक्षा आयोग द्वारा 'समान स्कूल प्रणाली' को अपनाया जावें, सामान्य विद्यालयों में योग्यता के आधार पर प्रवेश और निःशुल्क छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जावे। छात्राओं एवं पिछड़े वार्गों की शिक्षा के लिए विशेष प्रयास किया जावे। शारीरिक एवं मानसिक सुविधाओं काविकास किया जावे और ऐसे एकीकृत कार्यक्रम विकसित किये जायें, कि छात्र नियमित विद्यालयों में अध्ययन कर सकें।

❖ शिक्षा में निवेश बढ़ाकर राष्ट्रीय आय का 6 प्रतिशत व्यय स्तर पर लाया जावे।

नागरिक की शिक्षा को ध्यान में रखकर :

प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य :

❖ सामाजिक भावना को विकसित करना।

❖ पढ़ने–लिखने में कुशलता प्राप्त करना।

❖ स्वस्थ जीवन के सिद्धान्तों का उपयोग करना।

❖ अपने भौतिक,सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण की जानकारी प्राप्त करना।

❖ मौखिक, लिखित विचारों की स्वतंत्रता।

❖ राष्ट्रीय भावना का जागरण, श्रम के प्रति गौरव की भावना।

❖ सांस्कृतिक मूल्यों की जानकारी देना।

❖ देश के अन्दर तथा बाहर के लोगों के प्रति निर्भयता की भावना।

उच्च प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य :

विभिन्न विषयों के प्रति आस्था और सिद्धान्तों के प्रति आस्था उत्पन्न करना।

- परिवार, स्थानीय समुदाय एवं राष्ट्र के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना।
- अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव का विकास करना।
- देश के वर्तमान, भूत, भविष्य के प्रति सम्मान, गौरव पर आधारित देशभक्ति की भावना का विकास करना।
- उद्योगों के माध्यम से अनुभव प्राप्त करना।
- गणित के सिद्धान्तों की एवं सांकेतिक भाषा के प्रति जीवन में उपयोगी कार्यों को महत्व देना।

विद्या– अमूल्य धन :

विद्या ऐसा अमूल्य धन है, जिसको न चोर चुरा सकता है, न राजा छीन सकता है, न भाई–बन्धु बाँट सकते हैं, न पानी गला सकता है और न आग जला सकती है। एक बार धन खर्च करने से घट सकता है, लेकिन विद्या देने से और बढ़ती है और इसको पानेवाला विश्व के किसी भी कोने या भाग में चला जाये, वहाँ सम्मान पाता है। इस विद्या रूपी अमूल्य धन की रक्षा के लिए भगवान् ने हृदय रूपी सन्दूक दिया है, जिसमें किसी भी प्रकार के ताले की आवश्यकता नहीं होती और हमेशा सच्चे साथी के रूप में वह सदा साथ रहती है।

मनु के अनुसार '' विद्यादान'' सभी दान जैसे अन्न, जल, गौ, वस्त्र, तिल, घृत या स्वर्ण दान आदि से श्रेष्ठ है।[*1]

शिक्षा किसी के पास भी क्यों न हो, इनसे लेने में किसी बात का संकोच नहीं करना चाहिए।

किसी कवि ने कहा है :–

उत्तम विद्या लीजिए, यद्यपि नीच पै होय।

परो अपावन ठौर में, कंचन तजे न कोय।।

वास्तव में विद्या हमारे लिए कल्प वृक्ष है। यह सुख, ऐश्वर्य, यश, आदर और पैसा देती है। इसके बल पर हम अपनी हर एक इच्छा की पूर्ति का समाधान कर सकते हैं। जो व्यक्ति शिक्षित होता है उसमें नैतिकता पनपाती है; उच्च विचार एवं सकारात्मक चिन्तन का विकास होता है और सत्यम्, शिवम् एवं सुन्दरम् की प्राप्ति में सहायक होता है और उतनी ही मूल्यवान है जितनी वह शिक्षा, जो व्यक्ति को उच्च कुशल कार्य करने के लिए तैयार करती है जिससे वह अधिक धन कमाता है। शिक्षा उत्पादता को बढ़ाता है। जिस प्रकार रोटी, कपड़ा और मकान आवश्यक तत्व है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा भी एक वांछनीय तत्व है। यह भोजन की तरह अज्ञानता को दूर करने का एक पोषक तत्व है। इससे ही आनन्द एवं पुरस्कार मिलता है। भोजन की भाँति यह केवल उत्पादन में ही सहायता नहीं होती वरन् यह उपयोग का भी पदार्थ है। अतः देश के आर्थिक विकास के लिए देश के सभी बच्चों को सार्वजनिक रूप से शिक्षा देना देश की पहली जिम्मेदारी है और इससे ही देश का चहुँमुखी विकास संभव है।

शिक्षा बच्चों में अपनी निपुणता का विकसित करने के साथ–साथ उन्हें उत्तम नागरिक भी बनाना और उत्तम नागरिक मूल्यों को भी प्रदान किये जा सकते हैं।

अथर्ववेद में किसी एक पंक्ति द्वारा स्पष्ट किया है – ''शं सरस्वती सह धीभिरस्तु'' जिसका भावार्थ यह है कि शिक्षा के द्वारा जीवन में विवेक का गुण जागृत होना चाहिए, जिससे वह बुद्धि के द्वारा दुर्गुणों को छोड़े और सद्गुणों को अपनाए। '' विद्या ददति विनयम्'' विद्या से सुशीलता प्राप्त होती है। इसके द्वारा ही श्रद्धा और मेधा प्राप्त होती है। **शिक्षा वह बहुमूल्य निधि है जो हमें स्थूल और**

सूक्ष्म विषयों का ज्ञान कराती है।शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य लौकिक व्यवहारों का ज्ञान कराकर समाज में उचित रूप से व्यवहार करना सिखाती है। शिक्षा के द्वारा ही हमें वेद, उपनिषद, दर्शन की ओर अग्रसर करती है। हम ब्रह्म, आत्मा, लोक–परलोक आदि गूढ़ विषयों का चिंतन करते हैं। मनुष्य जीवन बहुमूल्य है। इसका उद्देश्य केवल भौतिक सुख प्राप्त कराना नहीं है, बल्कि आम–ज्ञान, ब्रह्मज्ञान और मोक्ष प्राप्त करना है। इसीलिए कहा गया है कि सा विद्या या विमुक्तये अर्थात् विद्या वह है जो हमें अमरता प्राप्त कराती है।

शिक्षा किसी भी देश के आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था की रीढ़ होती है, शैक्षिक विकास से ही देश का विकास और आर्थिक विकास जुड़ा हुआ है। समाज का भविष्य बेहतर बनाने के लिए सभी को शिक्षा का महत्व समझना होगा और समाज से शिक्षा का प्रसार करना होगा। निरक्षरता हमारे लिए पाप और शर्मनाक है और इसका नाश किया जाना चाहिए।

मानव के बीच साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने अनेक योजनाएँ आरंभ की हैं, जैसे कि कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना, दोपहर के भोजन की योजना और प्रारंभिक स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम। इन योजनाओं में से एक सबसे अधिक मूलभूत और आशाजनक योजना है सर्वशिक्षा अभियान। इसमें बताया गया है कि राज्य द्वारा 6 से 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों को निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा इस प्रकार प्रदान की जाएगी कि इसे कानून द्वारा निर्धारित किया जाए।

श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण ही शिक्षा का एक आवश्यक एवं प्रमुख कार्य है। श्रेष्ठ नागरिक ही प्रजातान्त्रिक व्यवस्था को सफल बना सकते हैं। शिक्षा छात्रों में देश–प्रेम,अनुशासन,सहयोग, सहनशीलता,स्पष्ट विचार आदि गुणों का विकास करे।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, '' कल्याणकारी राज्य में हमारा उद्देश्य अपने सब नागारिकों को भोजन, वस्त्र और मकान की प्रारम्भिक आवश्यकताओं को पूरा करना ही नहीं होना चाहिए, वरन् उनको भाइयों के समान रहना, सिखाना चाहिए– भले ही वे विभिन्न प्रजातियों, धर्मों और प्रान्तों के क्यों न हों। '' *2

3.3 शिक्षा में संचार की अदाएगी :

शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है, वह दुबारा जन्मता है अर्थात् द्विज बनता है। यह शिक्षा, संप्रेषण के द्वारा ही संभव है शिक्षा द्वारा ही अपनी पाशविक शक्तियों पर नियन्त्रण करना सीखता है, मनुजत्व का पाठ सीखता है और देवत्व की दिशा में कदम बढ़ाता है। किन्तु यदि शिक्षा कुशिक्षा हो गई तो वह पतन की राह पकड़ता है और उसके चरण दनुजत्य की ओर बढ़ते हैं। शिक्षा ऐसा क्षेत्र है जिसमें अतीत की उपलब्धियों का मूल्यांकन होता है और वर्तमान की समस्याओं का समाधान खोजते हैं और भविष्य की रूपरेखा बनाते हैं। इस प्रकार शिक्षा का क्षेत्र ही वह त्रिवेणी है जो वास्तव में मन को बल देती है, पवित्र करती है, मनुष्य को मनुष्य बनाती है।

अ. शिक्षा के क्षेत्र में संचार एवं पत्रकारिता का पारस्परिक संबंध :

जिस प्रकार संप्रेषण में श्रोता और वक्ता की ज़रूरत है उसी प्रकार शिक्षा को भी दो तटवाली नदी कह सकते हैं। वैसे तो हर नदी के ही दो तट होते हैं। उसमें एक तो वह पक्ष है जिसमें वह जीवन के मूल्य ग्रहण करता है, जीवन के मूल्यों को आत्मसात करता है। दूसरा पक्ष अर्थोपार्जन का है। अपनी संस्कृति में जीवन के जो मूल्य हैं, बहुत अच्छे हैं; उदात्त हैं, जिनसे उनका चरित्र बनता है और वह मनुष्य कहलाने योग्य बनता है।

शिक्षा में संप्रेषण का सम्बन्ध भूत, वर्तमान और भविष्यत काल से है। इनका सम्बन्ध निश्चय ही उज्जवल भविष्य से होता है। भविष्य की कल्पना करके ही

हम किसी शैक्षिक उद्देश्य, शिक्षण–क्रम या शिक्षण विधि का निश्चय करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में लिया गया 'आज का निर्णय', 'कल का यथार्थ' बन जाता है। आज जो भी कार्य हम शिक्षा के नाम पर कर रहे हैं उन सबका सम्बन्ध भविष्य से होता है और यदि हम भविष्य के आकलन में त्रुटि कर जाएँ तो निश्चय ही उस त्रुटिपूर्ण भविष्य के सन्दर्भ में दी गई शिक्षा भी त्रुटिपूर्ण हो जाएगी। अतः आज का शिक्षा शास्त्री संप्रेषण को ठीक तरीके से अपनाकर भविष्य के निर्माण के संदर्भ में उसे वहन करता है।

विद्या तो विमुक्ति के लिए है, न कि केवल अर्थ–प्राप्ति या प्रतिष्ठा –प्राप्ति के लिए। ज्ञानरूपी धनुष के द्वारा संप्रेषण रूपी शर फेंक कर स्वराजरूपी लक्ष्यबोध करने का नाम ही शिक्षा की सफलता है। संप्रेषण लिखित या मौखिक भी हो सकता है।

लिखित सम्प्रेषण के लाभ (Merits of Written Communication) :

- ✓ प्रत्यक्ष सम्पर्क आवश्यक।
- ✓ अपेक्षाकृत मितव्ययी।
- ✓ लिखित होने के कारण स्पष्ट व प्रभावी।
- ✓ भविष्य के लिखित प्रमाण का कार्य।
- ✓ लिखित सन्देश अधिक प्रामाणिक।

सामूहिक अधिगम की प्रविधियाँ (Group Learning Techniques):

- ❖ विचार– विमर्श *(Discussion)*
- ❖ समिति कार्य *(Committee Work)*
- ❖ अध्ययन गोष्ठी *(Seminar)*
- ❖ मस्तिष्क विप्लव *(Brain Stroming)*
- ❖ भूमिका निर्वाह *(Role Playing)*

- ❖ समूहिक कथन विधि *(SoCialized Recitation method)*
- ❖ संगोष्ठी *(Symposium)*
- ❖ पर्यालोचन या वाद–विवाद *(Debate)*

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था, '' निरक्षरता भारत के लिए लज्जास्पद पाप का प्रकरण है और इसका निकन्दन अवश्य होना चाहिए।''

पढ़े– लिखे नागरिक ही अपने विचारों एवं भावों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित कर सकते हैं और नए विचारों को अपना सकते हैं। देश –विदेशों में हो रहे राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक विकास का हम तभी जान सकते हैं, जब स्वयं अवबोध करने की क्षमता रखते हों। हमारे देश के सभी क्षेत्रों में प्रगति की ओर अग्रसर करने के लिए निरक्षरता के कलंक को मिटाने के लिए कार्यरत होना राष्ट्र की पहली आवश्यकता होनी चाहिए। निरक्षरता उन्मूलन राष्ट्रीय एवं सामाजिक अभियान के रूप में प्रभावी ढंग से प्रारंभ करना आवश्यक है ताकि सकरात्मक परिणाम प्राप्त कर सके। सूचना प्रौद्योगिकी में हो रहे परिवर्तन से वैश्वीकरण के संदर्भ में परिचित होना तथा शिक्षा में और जीवन में इसकी उपयोगिता को पहचानना और उसका अध्ययन और अध्यापन में उपयोग करना।

''ईच वन टीच वन'' के मंत्र की बजाय '' ईच वन टीच टू'' के नारे की आवश्यकता। इससे संप्रेषण विस्तार हो जाता है। दबे–हारे अपने कोटिश भाई–बहनों की पवित्रतम सेवा, शिक्षा देना ही है। शिक्षा व्यक्ति की संभावनाओं का, अनतः शक्तियों का उत्तेजन एवं उन्नयन करती है। संचार साधनों, स्वयंसेवी संस्थाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सभी छात्रों को राष्ट्रीय अभियान के द्वारा शैक्षिक सहभागी के रूप में अपनाना चाहिए। शिक्षा को आगे बढ़ने के लिए सामाजिक कार्यकर्ता एवं नेताओं को भी उत्प्रकरित करना चाहिए।

संप्रेषण में अध्यापकों की भूमिका :सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान तक मानव के जिज्ञासु मस्तिष्क द्वारा अर्जित ज्ञान को पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित करने, ज्ञान को संशोधित एवं सवंर्द्धित करने का काम शिक्षा एवं शिक्षक का रहा है। अध्यापक के व्यवहार का भी, बालकों के मनोवैज्ञानिक विकास पर प्रभाव पड़ता है, विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं में। अध्यापक के संप्रेषण से ही जीवन की तैयारी में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। गीली मिट्टी को जितनी आसानी से आकार दिया जा सकता है, उसी प्रकार कम उम्र के बच्चों में अच्छी आदतों और संस्कारों में ढाला जा सकता है। उनकी ग्रहण शक्ति और जीवन में सीखी गई बातों को उतारने की तत्परता जिस तीव्रता से बच्चों में देखी जाती है, उस तरह से जीवन की किसी अन्य अवस्था में नहीं देखी जाती। अध्यापकों का व्यवहार सकारात्मक होता है, उत्तरदायित्वपूर्ण होता है, सहानुभूतिपूर्ण होता है अथवा प्रेरक होता है, तो विद्यार्थी भी सजगता, रचनात्मकता, आत्म–नियन्त्रण आदि गुणों से युक्त होता है। माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में यदि प्रेरणा तथा कल्पनाशीलता होती है, तो छात्रों का व्यवहार भी समुचित होता है।

यह भी दावा किया गया है कि, '' जैसे सूर्य के बिना समूचा संसार प्रकाश–विहिन है वैसे ही शिक्षक की व्याख्या के बिना सभी विषय दुर्गोध हैं।'' *3

शिक्षा का पत्रकारिता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। राष्ट्र के निर्माण और विकास में उस देश की पत्रकारिता का स्थान महत्वपूर्ण होता है। यह शिक्षा के क्षेत्र में भी लागू होता है। पत्रकारिता के द्वारा शिक्षा का प्रचार–प्रसार के पीछे प्रमुख लक्ष्य ज्ञान को हृदयगम करते हुए बुद्धि को समृद्ध करने की क्षमता रखनेवाली तथा सत्य, धर्म, शान्ति, प्रेम और अहिंसा जैसे भारतीय आदर्शों के अनुरूप बनाना ही रहा है। इससे ही चरित्र, सही दृष्टिकोण तथा मूल्यों का निर्माण संभव है। पत्रकारिता ही शिक्षा में नेतृत्व प्रदान करने का सशक्त तथा सक्षम माध्यम है।पत्रकारिता और शिक्षा का संबंध वैसा ही होता है जैसा किसी शिशु का माता

से होता है। इसी प्रकार की धारणा हमारी परम्पराओं मेंरही है। पत्रकारिता के द्वारा छात्र के भाग्य में अंकित रेखाओं को बदलने की क्षमता रखता है।

शिक्षा की व्यवस्था देश के वर्तमान तथा भविष्य को उज्जवल बनाने योग्य होनी चाहिए जिससे इक्कीसवीं सदी में भावी पीढ़ी को भयंकर विनाश एवं असंतोष की घाटियों में धकेलने से बचाया जा सके। यह पत्रकारिता के द्वारा ही संभव है।शिक्षा के नव–नवीन माध्यमों का भी विकास होता रहेगा क्योंकि शिक्षा और पत्रकारिता मानव मन के प्रतिबिंब का वह एहसास है जो हर पल उसे जागृत करती रहती है।

समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पाढ़ी को बौद्धिक परम्पराएँ और तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने में सहायता देता है । इस तरह एक सच्चा अध्यापक जीवन भर छात्र बना रहता है।

शिक्षक के सम्बन्ध में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है –

'' एक अध्यापक कभी भी वास्तविक अर्थों में नहीं पढ़ा सकता, जब तक वह स्वयं अभी सीख न रहा हो। एक दीपक दूसरे दीपक को कभी भी प्रज्जवलित नहीं कर सकता जब तक कि उसकी अपनी ज्योति जलती न रहे। ''*4

शिक्षा की प्रक्रिया में अध्यापक एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी है और वस्तुतः वही हमारी संस्कृति के भविष्य का संरक्षक है। शिक्षक छात्र के अज्ञान रूपी अन्धकार को मिटाने वाला, एक ज्ञानरूपी प्रकाश दिखाकर मानवता के पथ को आलोकित करने वाला है।संप्रेषण द्वारा शिक्षण को रोचक, प्रभावोत्पादक व सफल बनाने के लिए एक अध्यापक में कई योग्यताओं को शिक्षण कौशल की जरूरत है।शिक्षण कौशल से सम्पन्न अध्यापक कक्षा–कक्ष का प्रबन्ध सहज ही कर सकता है तथा शिक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है और संप्रेषण भी अच्छी तरह कर सकते हैं।

कौशलों की सूची –

- प्रदर्शन कौशल।
- अभिनयीकरण और कहानी कहने का कौशल।
- दृश्य–श्रव्य सामग्री उपभोग।
- छात्र संभागिता संवर्धन कौशल ।
- वर्ग कक्ष प्रबंध कौशल।
- पाठ दोहराने का कौशल।
- गृहकार्य देने से संबंधित कौशल।
- अभिप्रेरणा कौशल।
- पाठ अथवा विषय का अन्य पाठों तथा विषयों से संबंध स्थापित करने का कौशल।
- मूल्यांकन कौशल।
- पाठ प्रस्तावना कौशल।
- व्याख्यान कौशल।
- प्रश्न पूछने का कौशल।
- श्यामपट्टे लेखन कौशल।
- उदाहरणों द्वारा दृष्टान्त देने का कौशल।
- उद्दीपन परिवर्तन कौशल।
- पुनर्बलन कौशल।
- उद्देश्य लेखन कौशल।

श्यामपट्ट प्रयोग :प्रोफसेर स्ट्रक के मत में , '' इसे अध्यापक और छात्र द्वारा श्यामपट्ट की प्रयुक्त विधा समझनी चाहिए, क्योंकि अध्यापक इसकी सहायता से निर्देश देता है और बालक अभिव्यक्ति ।''***5**

विज्ञान तथा सामाजिक ज्ञान जैसे विषयों में रंगीन चाक का प्रयोग कर इसके महत्व को और बढ़ाया जा सकता है। यह सस्ता साधन भी है, इसको अनेक प्रकार से काम में लाया भी जा सकता है। इसका उचित प्रयोग करने पर बच्चों के ध्यान का केन्द्र बन जायेगा। चाक तथा श्यामपट्ट, अध्यापक के संप्रेषण में शक्तिशाली तथा प्रभावशाली साधन हैं।

श्यामपट्ट द्वारा संप्रेषण :

कक्षा में श्यामपट्ट निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकता है–

- ❖ बच्चों के ध्यान को आकर्षित करता है।
- ❖ पाठ को दोहराने में सहायता देता है।
- ❖ श्यामपट्ट कठिन अंशों की व्याख्या में भी बहुत सहायता सिद्ध होता है।
- ❖ अध्यापन में विभिन्नता लाता है।
- ❖ यह बच्चों को सुन्दर लेख सीखने में सहायता देता है।

संप्रेषण की समस्याओं को दूर करने के उपाय :

संप्रेषण की बाधाएँ चूँकि मानवीय तथा भौतिक असफलताओं की वजह से पैदा होती हैं। अतः अधिकांश रूप में इन्हें दूर किया जा सकता है। संप्रेषण की समस्याओं को दूर करने के लिए निम्नलिखित सुझाव हैं –

- ➢ संप्रेषण प्रक्रिया में दिये जानेवाले सन्देश या सूचनाएँ अपने आप में पूरे होने चाहिए,क्योंकि अपूर्ण सन्देश प्राप्तकर्ता की रोचकता को कम करते हैं।
- ➢ सन्देश उपयुक्त वक्त में दिये जाने चाहिए।
- ➢ सम्प्रेषक के माध्यम से दिये जानेवाले सन्देशों की विषय–वस्तु सम्पूर्णता के साथ–साथ संक्षिप्त भी होने चाहिए, जिससे सम्प्रेषण को असरदार बनाया जा सके।

- सम्प्रेषक के द्वारा दिये जाने वाले सन्देश प्राप्तकर्ता की जरूरतों के अनुसार होना चाहिए प्राप्तकर्ता उसे ध्यान से सुनते तथा धारण करते हैं जो उनके लिए आवश्यक तथा काम के होते हैं।
- सम्प्रेषण श्रृंखलाएँ सीधी और छोटी होनी चाहिए। छोटी श्रृंखलाओं से सूचनाएँ त्वरित रूप में जा सकती हैं और व्यवधानों में कमी की जा सकती है। लम्बी श्रृंखलाएँ सम्प्रेषण में अवरोध पैदा करती हैं।
- सम्प्रेषण प्रक्रिया में विभिन्न भागीदारों के बीच संगठन में विश्वास, परिपक्वता, पारदर्शिता, प्रसिद्धि का एक उचित आन्तरिक संगठनात्मक वातावरण होना चाहिए।
- सम्प्रेषक के माध्यम से कोई बात कहने एवं उसकी शारीरिक मुद्रा के बीच परस्पर सम्बन्ध होना चाहिए। सम्प्रेषण के वक्त सम्प्रेषण के बैठने, खड़े होने एवं बोलने के तरीके में आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चय तथा सकारात्मकता दिखाई देनी चाहिए।
- सम्प्रेषक को सन्देश के उद्देश्य सन्देश प्राप्तकर्ता के सामने स्पष्ट कर देना चाहिए। साथ ही विषय–वस्तु और सन्दर्भ भी स्पष्ट कर देना चाहिए। सम्प्रेषण को प्रभावशाली बनाने के लिए यह भी जरूरी है कि सम्प्रेषक सभी मान्यताओं को भी पहले ही स्पष्ट कर दे।
- सम्प्रेषण को प्रभावी तथा सुगम्य बनाने के लिए आवश्यक है कि सम्प्रेषक अपने विचारों व दृष्टिकोणों के साथ अपने सन्देशों को प्राप्तकर्ता तक पहुँचाने में सफल हो जाये।
- सम्प्रेषण प्रणाली में सूचना प्रेषण की नई तकनीकों को भी इसमें समावेश हो सके और परिवर्तन होनेवाली संगठनात्मक जरूरतों को लागू किया जा सके।

- सम्प्रेषण को प्रभावी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि प्राप्तकर्ताओं की ग्रहणशीलता में बढ़ोत्तरी की जाये। सन्देशों को रुचिकर ढंग से प्रस्तुत किया जाए।
- उचित प्रतिपुष्टि के लिए जरूरी है कि सन्देश को असरदार ढंग से सुना जाये और उसी रूप में समझा जाए जिस रूप में सम्प्रेषित किया गया है। प्रभावोत्पादक सम्प्रेषण में प्रतिपुष्टि बहुत आवश्यक होता है।
- सम्प्रेषण में प्रयुक्त होनेवाली भाषा सरल, समझने योग्य तथा प्राप्तकर्ता के स्तर के अनुसार होनी चाहिए। सम्प्रेषक को सही शब्द एवं वाक्य का चुनाव करना चाहिए।
- असरदार सम्प्रेषण क्रिया में भावनाएँ भी एक विशेष भूमिका अदा करती हैं। चेहरे के हावभाव, हाथ हिलाना, गर्दन घुमाना आदि पर पूर्ण नियन्त्रण रखनी चाहिए।
- प्राप्तकर्ता के स्तर को ध्यान में रखकर ही माध्यम का चुनाव किया जाना चाहिए। सन्देश किस जगह में दिया जा रहा है और किस प्रकार दिया जा रहा है यह भी सम्प्रेषण माध्यम के चुनाव पर असर डालता है।

प्रभावोत्पादक सम्प्रेषण देनेके लिए अध्यापकों को निम्नलिखित सिद्धान्त अति आवश्यक है–

- संक्षिप्त स्वरूप।
- उद्देश्यपरक एवं अर्थपूर्ण।
- सही एवं सुस्पष्टता।
- उपयुक्तता।
- शिष्टता।
- विषय सकेन्द्रित।

❖ विषय सामग्री की पूर्णता।

❖ आपसी सहयोग एवं हिस्सेदारी।

3.4 पत्रकारिता के द्वारा शिक्षा के प्रचार–प्रसार :

प्रिंट माध्यम के द्वारा शिक्षा –

समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ प्रिंट शब्द के सुन्दर चेहरे हैं। शब्द ही समाचार – पत्रों के चेहरे को सँवारता है और इस मुद्रित माध्यम को जीवंत भी बनाता है। इसीलिए शब्द को सरस्वती का पर्याय मानते हैं। हमारी मनीषा ने शब्द को ब्रह्म की संज्ञा दी है। शब्द की प्राणवत्ता से ही अज्ञान की जड़ता भी टूटती है। शब्द अर्थ देने में समर्थ होता है। पत्रकारिता को समाज के प्रत्येक स्पंदन की माप बता सकते हैं। उसी को विकृतियों की प्रस्तोता आदर्श एवं सुधार लिए सहज उपचार भी माना जाता है। पत्रकारिता जहाँ शिक्षा के प्रचार–प्रसार का माध्यम है, उसमें उत्पन्न होने वाली जागृति का पर्याय है, इसमें उठ रही ज्वालामुखियों का अविरल प्रवाह भी है। इन माध्यमों की उपयोगिता से ही लोग शिक्षित होकर जागरूक भी बनाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नए–नए उपलब्धियों, प्रयोगों आदि की जानकारी आम जनता तक पहुँचाना ही पत्रकारिता का उद्देश्य है।

यदि हम पत्रकारिता को जनता एवं सत्ता के मध्य सेतु कहते हैं तो सत्ता के लिए अग्निशिखा और जनता के लिए संजीवनी। पत्रकारिता का उदय तब हुआ था जब सत्ता एवं जनता के मध्य संचार (संवाद)की स्थिति नहीं रहती है। सुशिक्षित गतिशील समाज की स्थापना एवं श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की स्थापना में पत्रकारिता में महत्वपूर्ण स्थान है। पत्रकारिता के द्वारा हमारे देश में शिक्षा का प्रसार हो रहा है। रेडियो, टेलिविजन, फिल्म, इन्टरनेट आदि में शिक्षा के प्रसार हो रहा है इसके साथ पत्रकारिता भी प्रगति की राह पर अग्रसर होती जा रही है। शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे प्रगति और सूचना के तथ्यों की प्रामाणिकता और

विश्वसनीयता के चलते ही समाचार–पत्र अथवा पत्रिका पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी पहचान बना पाते हैं। शिक्षा में तथ्यों की पूरी तरह से छान–बीन और प्रामाण्किता के उपरान्त ही समाचार–पत्र अथवा पत्रिका में सूचनाओं को प्रकाशित किया जाता है।

पत्रकारिता का उदय ही समस्त मामलों में चर्चा के लिए जनता के सामने समय–समय पर शिक्षा से संबंधित लोक–कल्याण कार्यों की सूची प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। प्रिंटिंग टेक्नालाजी की क्रांति एवं लोगों में साक्षरता बढ़ने के साथ–साथ अधिकाधिक जानने की उत्सुकता के कारण अखबार का चहुँमुखी विकास हुआ। पठनीय सामग्री की प्रस्तुति एवं विविधता में अंतर आया है। अब नई तकनीक में भी महारत हासिल करना होगी।

पत्रकारिता तथा शिक्षा आपस में जुड़ कर विकास तथा निर्माण की दिशा में योग दे सकते हैं। वर्तमान समय में रक्षा, वित्त, विदेश, राजनीतिक, विज्ञान, सांस्कृतिक आदि विभिन्न गतिविधियों के समाचारों के संकलन तथा उन पर फीचर आदि लिखने के लिए संवाददाता नियुक्त करते हैं, किन्तु शिक्षा का क्षेत्र इसमें विशेष है। पत्रकारिता शिक्षा और सूचना का सार्थक माध्यम है, शिक्षा का भी यही उद्देश्य है। पत्रकारिता यदि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त हथियार है तो शिक्षा की भी मानव विकास में तथा उसे 'सामाजिक प्राणी' बनाने में महती भूमिका है। शिक्षा के क्षेत्र में होनेवाले नित नये विषयों , परिवर्तनों को आम जनता तक पहुँचाकर उसे सुसंस्कृत, प्रगतिशील बनाने में पत्रकारिता ने अपना योगदान प्रकट किया है। विभिन्न शैक्षिक संस्थानों द्वारा चलायी जा रही शैक्षिक प्रवृत्तियों, शिक्षा जगत् की घटनाओं तथा शैक्षिक समस्याओं को जन–संचार माध्यमों के द्वारा जनता तक पहुँचाना पत्रकारिता का वह सकारात्मक पक्ष है जिसके समुचित विकास से समाज में वैचारिक चेतना तो विकसित होगी ही और इसके साथ ही शिक्षण संस्थानों के छात्र–अध्यापक समुदाय में भी आपसी

सौहार्द तथा समझ का वातावरण विकसित होगा। पत्रकारिता ही एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिससे शिक्षा संस्थानों में अन्तर्सम्बन्ध कायम कर सकता है और इससे ही उच्च शिक्षा के आगमन तक पहुँचाया जा सकता है। इसके माध्यम से ही वर्तमान समय में सेमिनार तथा कार्य शालाओं में विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर जो पत्र वाचन किया जाता है, विचार विमर्श किया जाता है तथा निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं वे साधारण पाठकों तक तथा अन्य इच्छुक व्यक्तियों तक पहुँच पाते हैं। शैक्षिक गतिविधियों पर फीचर लेखन भी समाचार–पत्रों में दृष्टिगत होती है।

हमारे देश में जितने भी विश्वविद्यालय मौजूद हैं सभी शोधकार्य में जुटे हैं। विभिन्न विभागों के प्रतिभावान छात्र और शिक्षक प्रतिदिन खोज करके तकनीकी–सामाजिक विकास की दिशा में योगदान दे रहे हैं। समाचार–पत्र में भी इसके बारे में सूचना प्रस्तुत करते हैं और इसी दिशा में कुछ कार्य कर सकते हैं। आधुनिक पत्रकारिता में महत्वपूर्ण शोध प्रबन्धों में से जन हित के निष्कर्षों को समाचार अथवा रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत कर, प्रकाशित कर सकता है। शिक्षा जगत् के घपलों तथा भ्रष्टाचार को भी उजागर करते हैं। छात्रों व अध्यापकों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है। समाचार पत्र में विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालय स्तर की छात्र गतिविधियों के समाचार पर्याप्त संख्या में प्रकाशित होते रहे। इसके साथ ही समीक्षात्मक लेख भी प्रस्तुत करते हैं। इसमें वाद–विवाद, प्रतियोगिता तथा अन्य साहित्यिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, राष्ट्रीय सेवा योजना तथा एन.सी.सी के आयोजन, छात्रों के वैशिष्ट्य, जिसमें परीक्षाओं में सर्वोच्च अंकों से लेकर पी.एच.डी आदि की उपाधियों की प्राप्ति भी मुख्य समाचार हैं।

जैसे जैसे मनुष्य के जीवन की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं वैसे ही वैसे समाचार पत्रों में स्तम्भों की योजना विस्तारित होती जा रही है। आजकल

समाचार पत्रों में प्रायः चिकित्सा स्तम्भ, खेती किसानी स्तम्भ, ज्ञान विज्ञान स्तम्भ, शिक्षा व संस्कृति स्तम्भ, फिल्म या सिनेमा जगत स्तम्भ, खेल स्तम्भ, महिला स्तम्भ, ज्योतिष स्तम्भ, साहित्य स्तम्भ, गृह साज–सज्जा एवं वास्तु स्तम्भ जैसे विविध स्तम्भ छापे जाते हैं। इससे जनता को शिक्षा से संबंधित विषयों की गहरी जानकारी मिलती है।

विज्ञापन भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। विज्ञापन का जादू आज चतुर्दिक व्यापक है। विज्ञापन केवल बिक्री के लिए ही नहीं होता इससे छवि–निर्माण का कार्य लिया जाता है। यह राजमार्ग, रेलवे स्टेशन, बसस्टैंड, सिनेमाघर, चौराहा, यातायातवाले सभी क्षेत्र के गारे में संदेश प्रस्तुत करने का केंद्र बिंदु हैं। विज्ञापन के माध्यमों से शिक्षा, अत्यंत कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

सिनेमाघरों में स्लाइड को कुछ क्षणों तक पर्दे पर प्रदर्शित किया जाता है। जिसमें शिक्षा प्रचारित किया जाता है। इसी तरह संदेश तथा प्रचार कार्य की दृष्टि से विज्ञापन फिल्में दिखाई जाती हैं।

होर्डिंग एक तरह का बड़े आकार का प्रदर्शन बोर्ड होता है। जिसे ऐसे स्थानों पर लगाया जाता है जहाँ जन–जन का ध्यान सहज में आकृष्ट किया जाता है। इस बोर्ड में शिक्षा का संदेश आकर्षक चित्र बनाकर व्यक्त किया जाता है।

न्यून साइन :

यह भी एक प्रकार की होर्डिंग ही होती है। जिसमें बिजली का उपयोग करके शिक्षा का प्रदर्शन दिन–रात किया जाता है। अब कहीं–कहीं न्यून साइन द्वारा ताजा समाचार भी यदा–कदा ऐसे स्थानों पर दिखाए जाते हैं जहाँ लोगों की आवाजाही बनी रहती हैं शिमला नगर में हिमाचल टाइम्स के संपादक श्री देव पांदी ने हिमाचल की राजधानी शिमला और शिमला नगर के सर्वाधिक

भीड़–भाड़वाली मालरोड पर, यह तकनीक अपनाकर 'विंडो जर्नलिज्म' का सफल प्रयोग किया है।

21वीं सदी की पत्रकारिता :

जो कल था, आज नहीं है, जो आज है, कल नहीं रहेगा। कल से आज का आज से कल का संघर्ष है, अनवरत संघर्ष। यह संघर्ष पत्रकारिता का और शिक्षा में भी कभी खत्म नहीं होता । खत्म होती है तो सिर्फ इन्सान की अमरता, अमरता की स्पृहा का प्रतिष्ठान, प्रतिष्ठान का प्रतिमान, उसकी मूर्ति, उसका प्रतीक, उसका ध्वज, उसका निशान शेष बचते हैं तो सिर्फ प्रतिष्ठानों के ध्वंसावशेष, उनकी जन श्रुति, उनका इतिहास और उनकी कहानी। कागज़ के पन्ने पलटने के बजाय बैठे–बैठे केवल माउस दबाकर स्क्रीन ताकना और खेल–खेल में बहुत कुछ पढ़ जाते हैं। सम्प्रति 'ई–जर्नलिज़्म', 'ई–लाइफ' का पर्याय है। ई–मीडिया, ई–ट्रेड़िग, ई–एजुकेशन, ई गवर्नेंस आदि के कारण अब ई–युग की स्थापना हो चुकी है। ई–अखबार विधा की शुरुआत हुई थी तो यह निःशुल्क वितरण के तौर पर थी, यानी उद्देश्य यह था कि कंप्यूटर क्रांति (कंप्यूटर शिक्षा) को और भी अधिक फैलाव देने, लोगों के बीच उसकी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए ई–अखबार को ज्ञान–प्रसार का माध्यम बनाया जाए ताकि लोगों तक इसके पहुँच के साथ ही उसे चलाने के लिए लोग कंप्यूटर को भी चलाना सीखें और उसे स्वयं अपनाकर प्रयोग भी कर सकते हैं।इस तरह से एक तीर से दो निशाने लगे और सटीक लगे।

आज तो उपग्रहों के चलते एक ही पत्र के कई संस्करण विभिन्न नगरों से एक साथ प्रकाशित हो रहे हैं। इलेक्ट्रानिक्स आविष्कारों के फलस्वरूप विस्मयकारी संचार उपकरण उपलब्ध हो रहे हैं जिनसे समाचार–संकलन, सम्पादन, मुद्रण, प्रति–संशोधन, प्रकाशन और प्रसारण में परिवर्तन दृष्टिगत हो रहे हैं।'नया शिक्षक', 'नई तालीम', 'प्रौढ़ शिक्षा', 'नई शिक्षा', 'भारतीय विद्या', 'भारती', 'राष्ट्रनिर्माता' आदि शिक्षा से संबंधित समाचार प्रस्तुत करते हैं।

प्रिंट माध्यम के द्वारा शिक्षा को विकसित करने के लिए विभिन्न सूचना इस प्रकार है –

तापमान	रेलवे तालिका
आज होनेवाले कार्यक्रम	सिनेमा
परीक्षा	निधन सूचना
वर्षगाँठ	निविदा सूचना
विज्ञापन	खेल

इसके अलावा नाटक और कहानी के द्वारा धार्मिक मूल्यों को प्रचार करते हैं। हर एक समाचार पत्र में विशेष अंक भी छापते हैं। जैसे 'दी हिन्दू'रविवार के पत्र में शिक्षा और रोजगार के लिए अलग स्तम्भ में समाचार प्रस्तुत करते हैं। इस तरह प्रिंट माध्यम एक क्षेत्र में नहीं बल्कि अन्य क्षेत्र में होनेवाले सूचना को प्रस्तुत कर शिक्षा का प्रचार –प्रसार करते हैं।

इलेक्ट्रानिक माध्यम :

रेडियो : रेडियो को संचार का, नेत्ररहित अथवा अंधामाध्यम भी कहा जाने लगा है क्योंकि इसमें संचार और सूचना प्राप्तकर्ता एक–दूसरे को देख नहीं सकता है। यह ध्वनि के द्वारा श्रोताओं के कानों को स्पर्श करता है। अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण अब भी अनूठा स्थान बनाये हुए है। आर्थिक दृष्टि से सस्ता तथा गमनीय माध्यम है। रेडियो पर सूचनाएँ मिल जाती हैं और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विभिन्न विज्ञापन, प्रश्नावली आदि विविध कार्यक्रम भी होते रहते हैं। रेडियो के सम्मोहक प्रभावों के बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में उसके उपयोग की अच्छी सम्भावनाएँ हैं। आकाशवाणी हैदराबाद के श्रोता अनुसंधान अधिकारी, एच. हनुमन्तराव के सर्वेक्षण का निष्कर्ष है कि सुनियोजित और प्रभावशाली शैक्षणिक कार्यक्रम छात्रों में सीखने की ललक, ज्ञानवृद्धि और शब्दावली पर अच्छा

अधिकार जमाने में सहायता करते हैं। शिक्षा संबंधित विषय,कृषि जगत् जैसे लाभकारी कार्यक्रम और महिला जगत के विविध कार्यक्रम बड़ी रुचि से सुनते हैं। विभिन्न प्रसारण केन्द्र होने के कारण इनमें भी अपनी पसंद के चैनल को सुना जा सकता है। रेडियो से सूचना प्राप्त करते समय व्यक्ति को अपनी आँख और हाथ की अधिक भागीदारी नहीं करनी पड़ती, जिससे रेडियो सुनते समय वह कोई अन्य कार्य भी कर सकता हैं। रेडियो का श्रोताओं पर प्रभाव उनकी रेडियो प्रसारण सुनने की प्रवृत्ति पर निर्भर है। रेडियो का प्रयोग परिचर्चा या सामयिक विषयों को सुनने के लिए भी होता है। रेडियो पर प्रसारित होने वाले समस्त कार्यक्रमों में नवीनता, विविधता आदि विशेषताओं लाकर उन्हें प्रभावात्मक बनाता है। रेडियो से समाज के लोगों पर विशेष प्रभाव है। लोग रेडियो के कार्यक्रमों से सूचना पाते हैं। सूचनाओं का विश्लेषण सुनते हैं, मनोरंजन पाते हैं, जीवन दर्शन , सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय सद्‌बोधन का विकास पाते हैं। एफ.एम. रेडियो के प्रचलित होने के बाद भारतीय जनमानस में एक नई क्रांति का सुत्रपात हुआ है। इसमें शैक्षिक संस्थानों के बारे में बताते हैं, जिससे विभिन्न तरह के पढ़ाई के बारे में सूचना प्राप्त कर सकते हैं। एफ.एम. रेडियो के माध्यम से शिक्षा से संबंधित विषयों से लाखों लोग आज लाभान्वित हो रहे हैं।

रेडियो से बच्चों की कल्पना–शक्ति जाग्रत हुई है। बच्चे प्रसारित गीतों और नाटक के सम्वादों को जल्दी दोहराने लगते हैं। शिक्षकों का मत था कि रेडियो प्रसारणों से उनकी शिक्षण–पद्धति में आशातीत सुधार हुआ है। रेडियो प्रसारणों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि वे योग्यतम व्यक्तियों द्वारा सोचे, लिखे और प्रस्तुत किए जा सकते हैं । इससे सभी स्कूलों के छात्रों को उत्कृष्ट सामग्री मिल जाती है। रेडियो में समाचार, समाचार दर्शन, परिचर्चाएँ, साक्षात्कार, नाटक आदि का प्रस्तुतिकरण होता है। राष्ट्रीय कार्यक्रम के माध्यम से सामुदायिक श्रवण

संभव है। विशेष वर्ग जैसे नारी जगत्, बाल जगत्, शिक्षा जगत्, कृषक समाज आदि के लिए विशेष कार्यक्रम होते हैं।

वास्तव में रेडियो समाचार पत्र या अन्य संचार माध्यमों का प्रतिद्वंद्वी कभी नहीं रहा। यह एक ऐसा माध्यम है, जिसका प्रभाव स्थूल से सूक्ष्म हो गया है, अर्थात् समाचार पत्र को देखना और पढ़ना पड़ता है। जबकि रेडियो में श्रव्य–नाद वाणी गुण हैं । सुप्रसिद्ध पत्रकार के पी. नारायण के शब्दों में '' सोफे पर आराम से पड़े हुए, आँखें मूँदकर, रेडियो से प्रसारित समाचार या रूपक सुनना, सीधे बैठकर समाचार–पत्र में मुद्रित छोटे–छोटे अक्षरों को आँखों पर जोर देकर पढ़ने के बजाय अधिक सुखकर होता है।''***6**

रेडियो के रूप में शिक्षा के प्रचार–प्रसार निरक्षर लोगों को भी पहुँचाया जा सकते हैं। उन्हें ऐसी बहुत सारी बातों की जानकारी दी जा सकती है जो उनके जीवन और व्यवसाय के लिए जरूरी तो है परंतु पढ़ना न जानने के कारण जिनसे वंचित रह जाते हैं। मसलन किसानों को मौसम, खेती से संबंधित विभिन्न मसलों, स्त्री पुरुषों का स्वास्थ्य और अन्य जन सेवाओं के बारे में शिक्षित किया जा सकता है। रेडियो, भारत जैसे देश में औपचारिक शिक्षा से अधिक अनौपचारिक शिक्षा में कहीं ज्यादा मददगार साबित किया है।

रेडियो में प्रस्तुत विभिन्न कार्यक्रम :

समाचार	रेडियो नाटक
राजनीतिक गतिविधियाँ	विज्ञापन
कृषि जगत	कहानी
आप की पसंद की कविता	फिल्म

रेडियो में प्रस्तुत विज्ञापनों के कार्य निम्नवत् हैं –

- किसी भी नई वस्तु को खरीदने और अपनाने की प्रेरणा देना।

- बाजार में आई नई वस्तु की समग्र सूचना देना।
- विशेष छूट, मूल्यों में आई कमी को विज्ञापित करना।
- ग्राहकों में बारम्बारता के नियम से स्मृति रूप में छाए रहकर वस्तु के प्रति रुचि एवं विश्वास उत्पन्न करना।
- उपयोगिता तथा अन्य समान गुण धर्मी वस्तुओं से अपने उत्पाद की श्रेष्ठता बतलाकर उपभोक्ता को उसकी खरीददारी हेतु प्रेरित करना।

दूरदर्शन : दूरदर्शन की स्थापना के साथ ही यह घोषित किया गया था कि इसे 'सामाजिक शिक्षा' के औज़ार के रूप में इस्तेमाल किया जायेगा। दूरदर्शन ने बच्चों को लक्ष्यीभूत दर्शक मान कर शुरूआत की थी : उद्देश्य था शैक्षणिक कार्यक्रम देना। टेलीविजन दृश्य माध्यम अर्थात् टेलीविजन वास्तव में एक ऐसा माध्यम है, जो इस सदी का अत्यंत लोकप्रिय माध्यम है और इसने प्रिंट माध्यम(समाचार पत्र), आकाशवाणी(रेडियो), फिल्म आदि को पछाड़ दिया है। दूरदर्शन एक अच्छा सूचना प्रदायक माध्यम है। दूरदर्शन ने लोगों को साक्षर बनाने में सहायता की। भारतीय समाज में लोकतांत्रिक विषयों को बड़ी गहनता और सूक्ष्मता से पहचाना जाता है।

आँख और कान जैसे दो संवेदी अंगों के एक साथ प्रयोग में आने के कारण विषय को स्पष्ट करने में सहायता मिलती है। टेलीविजन के कारण बालक,पालक और शिक्षक सभी एक–सा सन्देश ग्रहण करते हैं। टेलीविजन विचारों, विश्वासों और प्रवृत्तियों को उद्दीप्त और सुदृढ़ करता है, इसीलिए शिक्षा के क्षेत्र में उसकी प्रभावी भूमिका हो रहा है। यू.जी.सी (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) ने उच्च शिक्षा के लिए दृश्य संस्कृति का उपयोग किया। एन.सी.ई.आर.टी(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्) ने स्कूलों की प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में टेलीविजन का प्रयोग किया। सन् 1999 से दूरदर्शन 'ज्ञानदर्शन' नाम से एक एजूकेशनल चैनल (शैक्षिक चैनल) चला रहा है। यह

केबल के जरिए ही देखा जा सकता है। गणित, विज्ञान आदि विषयों के साथ–साथ भाषा और साहित्य का पाठ भी टेलीविजन के जरिए पढ़ाया जा रहा है। इस तरह श्रव्य तथा दृश्य माध्यमों का उपयोग पाठ्य–सामग्री के प्रसारण के लिए किया जा रहा है। एजूकेशनल टेलीविजन के प्रसारणों में स्वास्थ्य तथा सफाई की शिक्षा के साथ–साथ समय–समय पर नृत्य, नाटक आदि के कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं।

दूरदर्शन में बाल कार्यक्रमों की तीन श्रेणियाँ बनायी गयी–

- ऐसा कार्यक्रम जिसमें सूचना हो, उच्चस्तरीय फेंटेसी हो तथा मनोरंजन हो।
- दूसरी श्रेणी ऐसे कार्यक्रमों की जिसमें सूचनाओं का दबाव ज्यादा हो, फैंटसी कम हो, कोई मनोरंजन न हो।
- तीसरी श्रेणी ऐसे कार्यक्रमों की हो सकती है जिसमें कोई सूचना न हो पर फेंटसी हो एवं उच्च स्तरीय मनोरंजन हो।

टी.वी कार्यक्रमों से शैक्षणिक लाभ :

- बच्चों को सीधे शिक्षित करने एवं बहुविध अवधारणाओं का एक साथ ज्ञान देना उन्हें कम आकर्षित करता है।
- कृत्रिम चेहरेवाले एवं खिलौने वाले चरित्र ज्यादा रोचक होते हैं। अगर वे मूल चरित्र की प्रकृति के अनुरूप हों।
- लम्बे समय तक दिखाये जाने वाले दृश्य चित्र बच्चों ही सुसंगत दृष्टि को प्रभावित करते हैं।बच्चों में बच्चों के द्वारा अभिनीत कार्यक्रमों को ज्यादा पसंद किया जाता है।
- भाषा का उच्चारण, समानान्तर घोषणा एवं दृश्य चित्रों के बीच में संतुलन की जरूरत है।

- ❖ शैक्षिक प्रसारण के अंतर्गत देश के दूरस्थ स्थानों में डिस्टेंस एजूकेशन पद्धति के द्वारा अनेक शैक्षणिक कार्यक्रम चलाए जाते हैं जिसमें भाषा, साहित्य, तकनीकी एवं विज्ञान जैसे अनेक विषयों को प्रस्तुत करते हैं।
- ❖ संगीत एवं ध्वनि के प्रयोगों से बच्चे जल्दी प्रभावित होते हैं तथा बाल कार्यक्रमों में इसकी जरूरत है।
- ❖ जीवन्त परिस्थिति एवं विशिष्ट चरित्रों का बच्चों पर बेहतर प्रभाव होता है।
- ❖ बाल कार्यक्रमों को कल्पना एवं यथार्थ के सहमेल से तैयार किया जाए।
- ❖ विज्ञान, साहित्य, कला एवं इतिहास की जानकारी को रचनात्मक ढंग से संप्रेषित करनेवाले कार्यक्रमों को ज्यादा से ज्यादा दिखाया जाय।
- ❖ दूरदर्शन से बच्चों का ज्ञान क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक बनाने के लिए उन्हें विश्व समाज,अंतरिक्ष एवं विश्व साहित्य की रचनात्मक ढंग से जानकारी देती है।
- ❖ बच्चों में नये स्वस्थ मानवीय समाज का सपना, बुर्जुगों के प्रति सम्मान, हम उम्रों के प्रति प्यार एवं स्नेह जगानेवाली प्रवृत्तियों को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा दिया जाए।

इस समुची प्रक्रिया में बच्चों के अंदर राष्ट्रबोध एवं विश्व मानवता के प्रति आस्था भी पैदा की जाय। यह कार्य उपदेशपरक शैली में नहीं होना चाहिए।

निःसंदेह टेलीविजन आधुनिक समाज में शिक्षा का एक प्रभावात्मक माध्यम बन चुका है। यह मानव के सर्वांगीण विकास में निम्नानुसार सहायक है– आधुनिक भारत में शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे विभिन्न माध्यम जैसे समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ, आकाशवाणी(रेडियो), फिल्म, दूरदर्शन के द्वारा सभी भारतीय नागरिकों को प्रभावित किया है।

- ➢ शिक्षा इस संसार का स्पंदन या धड़कन है। हर व्यक्ति अपने भावों, विचारों को दूसरों तक संप्रेषित करना चाहता है। यह जनसंचार माध्यम के द्वारा ही सम्भव है।

- समाज का कोई भी आयाम (क्षेत्र) ऐसा नहीं, जिसका संबंध शिक्षा से न हो। स्पष्ट है जीवन की आंतरिक यात्रा है। शिक्षा अतीत के पौराणिक व पुरातन स्वरूप में से सांस्कृतिक निधियों को बटोरता है। वर्तमान की यथार्थमूलक स्थितियों से अवगत कराता है, भविष्य की मंगलकामना करता है व सजगता बढ़ाता है।

दूरदर्शन में सामान्यतः ये विधायें सम्मिलित हैंः समाचार, साक्षात्कार(इंटरव्यू), डॉक्यूमेंटरी, सीधा प्रसारण, कृषि जगत आदि। डिस्कवरी चैनल के बहुत से अन्वेषणपरक कार्यक्रम, डॉक्यूमेंटरी इत्यादि, ज़ी.टी.वी. का 'हमज़र्मी' – जैसा पर्यावरण चेतना कार्यक्रम आदि। 'विकटर्स', मलायालम चैनल केवल शिक्षा के लिए ही है और कोई कार्यक्रम इसमें प्रस्तुत नहीं करते हैं। मनोरंजन के साथ तथ्यपरक सूचना देने वाले ऐसे कार्यक्रम बहुत रुचिपद के साथ देखे जाते हैं। 'इंटरव्यू' का तो बहुत बड़ा क्षेत्र है, जिसमें विभिन्न चैनल नए–नए प्रयोग भी करते हैं। यथा –'आप की अदालत'(ज़ी. टी.वी), और उसी का रूपांतर 'जनता की अदालत'(स्टार टी.वी) आदि कार्यक्रम 'इंटरव्यू' एवं प्रोफ़ाइल के मिले–जुले रूप हैं। ज़ी.टी.वी के 'इंसाइट' और स्टार टी.वी के 'कैलाइडोस्कोप' कार्यक्रम। 'सुरभि'(दूरदर्शन) कार्यक्रम भी ऐसा ही कार्यक्रम है जिसमें संस्कृति का भव्य स्वरूप है। 'ए फेस इन क्राउड'(दूरदर्शन),'प्रोफ़ाइल'(स्टार टी.वी) सरीखे संक्षिप्त कार्यक्रम, 'आदरणीय प्रधानमंत्री' एवं 'घूमता आइना'(ज़ी. टी.वी) और आँखों देखी (दूरदर्शन)–जैसे कार्यक्रम भी पत्रकारिता से जुड़े हैं। इसके अलावा रामायण, महाभारत, जय हनुमान आदि धारावाहिकों से धार्मिक मूल्यों का प्रचार – प्रसार होता है।

शिक्षा में एक बड़ा परिवर्तन दृश्य–श्रव्य माध्यमों के कारण संभव हुआ है। टेलिविजन और रेडियो पर शैक्षिक प्रसारण द्वारा एक साथ बहुत बड़े क्षेत्र और बहुत बड़ी संख्या तक पाठ्यसामग्री पहुँचाना सुलभ हो गया है। कक्षा

में रूबरू अध्ययन के साथ–साथ और दूर शिक्षा के मामले में कक्षा आधारित अध्ययन के विकल्प के एक अंग के रूप में इन प्रसारणों का महत्व असंदिग्ध् है। इन दृश्य–श्रव्य माध्यमों को कैसेटों द्वारा उपलब्ध कराकर विद्यार्थियों को समय और स्थान को मुक्त कराकर जब चाहिए तब पढ़ सकते हैं। उनको जब चाहें घर पर वीसीआर या टेप रिकार्डर पर शैक्षिक कार्यक्रमों को देख और सुन सकते हैं। कुछ स्थानों पर यह भी किया जा रहा है कि लोग अपने इलाके के केबल आपरेटर से मिलकर इन कार्यक्रमों के नियमित प्रसारण की व्यवस्था कर रहे हैं। उस क्षेत्र के लोगों को उसका लाभ मिल सके। कई प्रायवेट ट्यूटर अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए **आडियो कैसेट्स** का इस्तेमाल कर रहे हैं।

फिल्म:खोजों से यह भी पता चला है कि टेलीविजन की तरह फिल्में भी शिक्षा का अच्छा माध्यम हैं। शिक्षा में फिल्मों के उपयोग से कई लाभ होते हैं। फिल्में गीत देकर विषय को विशिष्ट अर्थ प्रदान करती हैं। वे वास्तविकता का आभास बढ़ाती हैं। फिल्में काल पर भी नियन्त्रण रखती हैं। उसे आवश्यकतानुसार घटा या बढ़ा कर उसे प्रस्तुत कर सकती हैं। बच्चे शैक्षिक फिल्म से प्रेरणा लेकर नयी गतिविधियाँ प्रारम्भ करते हैं। फिल्में चिन्तन, मनन और सहायता देती हैं। अच्छी फिल्म योग्य प्रशिक्षक या प्रदर्शक की कमी को भी पूरा कर सकती है। वीडियो के प्रसार के कारण अब शैक्षिक फिल्मों की उपयोगिता बढ़ गई है। हमें धार्मिक चलचित्र से आध्यात्मिक मूल्य मिलते हैं। कुछ चलचित्र से मनोरंजन, राजनीति, यथार्थमूलकता और तिलस्म, मनोरंजन आदि भी मिलते हैं।फिल्म देखने से जो शिक्षा लोगों को मिलती है उससे उनके भाव बढ़ सकते हैं, सभ्यता का उदात या अच्छा रूप बनाया जा सकता है।

डाक्युमेंटरी फिल्म : छोटे परदे पर समय–समय पर प्रसारित होने वाली डाक्युमेंटरी का भी शिक्षा के विकास के मामले में काफी योगदान है । हर विषय पर बनी डाक्युमेंटरी फिल्में तो नहीं, बल्कि शैक्षिक विकास से सम्बन्धित विषयों

पर बनी फिल्में अपने मकसद में काफी हद तक कारगर होती हैं। इस तरह की फिल्मों का अपना एक समृद्ध इतिहास है और वे हमेशा लोगों को शिक्षित तथा सूचित करते हुए उनके व्यापक जागरण का लक्ष्य पूरा करती रही हैं। शैक्षिक डाक्युमेंटरी फिल्म तैयार करने के लिए शिक्षा– विदों, जनसंचार विशेषज्ञों को मिलजुल कर प्रयास करने होंगे, तभी रोचक और प्रभावशाली कार्यक्रम नियमित तैयार हो सकेंगे। विभिन्न विषयों पर डाक्युमेंटरी फिल्म वास्तविक दृष्टि डालती है। पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ इन फिल्मों को ज्यादा देखती हैं और इससे नई से नई बातें भी जानते हैं। डाक्युमेंटरी फिल्मों का खासा योगदान पर्यावरण और जन स्वास्थ्य के प्रति सूचना फैलने में भी रहा है। इन विषयों पर बनी फिल्मों ने लोगों को यह बताया कि पर्यावरण की संरक्षा, जन स्वास्थ्य की उपलब्धि और इस संबंध में सचेत और सतर्क भी ज़रूर कर दिया जाता है।

इंटरनेटः

इंटरनेट बच्चों में समूचित विकास करने में एक अच्छा टीचर, अभिभावक की भूमिका निभा सकता हैं इसमें ई–अखबारों ने काफी अल्प समय में सफलता के नये प्रतिमान गढ़े हैं जिससे यह साफ हो गया है कि आनेवाले समय में यह मजबूती के साथ आमजनों के बीच लोकप्रिय होगा और आमलोगों को इससे लाभ मिलेगा। ई–अखबार तो ऑनलाइन सलाह देने की सुविधा उपलब्ध करा रहे हैं।

वेब पत्रकारिता के अंतर्गत पाठक को उसकी अन्य उत्सुकताओं को पूरा करने के लिए जानकारी के अन्य स्त्रोत या लाइब्रेरी की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती है। वेब पत्रकारिता में पत्रकार–पाठक अंतरसंबंध की इस विशिष्टता को इस प्रकार समझा जा सकता है–

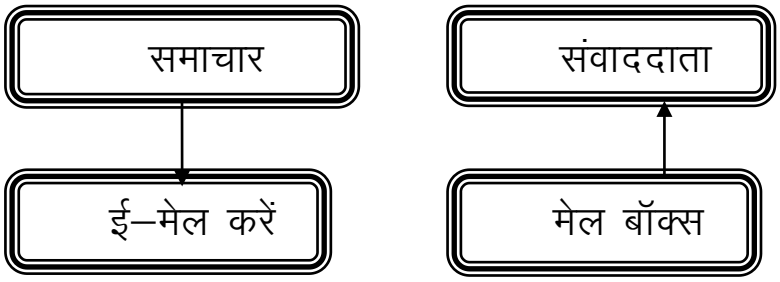

→

इस प्रकार के पत्रकार–पाठक अंतसंबंधों का प्रमुख उद्देश्य एवं लाभ यह होता है कि जहाँ एक ओर विषय विशेष पर पाठक की जानकारी काफी शीघ्रता से मिलती है वही पाठक की प्रतिक्रिया के बाद जो संपादकीय स्टोरी बनती है वह ज्यादा विश्वसनीय और मुकम्मल होती है।

इंटरनेट के द्वारा शिक्षा के लिए विभिन्न उपयोग :

1- विकिपीडिया **(Wickipedia)**

2- ऑनलाइन शब्दकोश **(Online Dictionary)**

3- इन्टरनेट पर शब्दकोश और विश्वकोश**(Dictionaries and Encyclopedia)**

4- डाउनलोड योग्य शब्दकोश फाइलें **(Downloadable Dictionary files)**

इस तरह इलेक्ट्रानिक माध्यम से राजनीतिक समाचार, विकास समाचार, सांस्कृतिक समाचार, मानवीय पक्ष के किसी पहलू से जुड़े समाचार, खेल समाचार, मौसम समाचार आदि के द्वारा शिक्षा का प्रचार–प्रसार होता है। इसके साथ ही साफ्टॅट स्टोरी, विज्ञापन आदि के द्वारा भी मनोरंजक ढंग से शिक्षा का प्रसार होता है।

इसके अलावा प्रदर्शनी द्वारा भी शिक्षा के लिए काफी समय तक मान्यता प्राप्त है। बड़े–बड़े आविष्कारों और नई–नई प्रगति को प्रदर्शनियों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। आजकल मेलों और उत्सवों में प्रदर्शनियाँ दिखाई जाती हैं। बड़े राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय मेले आधुनिक संचार साधनों की सहायता से शिक्षा से संबंधित बहुत सारे विषयों को उपलब्ध कराती है। विश्वसनीयता तथा सहयोग की भावना के साथ–साथ शिक्षा का प्रचार प्रसार करने के लिए प्रदर्शनियाँ एक कारगर साधन हैं। पंचवर्षीय योजना की उपलब्धियों और विश्वविद्यालय संबंधित जानकारियों को भी प्रदर्शनियों के माध्यम से दर्शाया जाने लगा है।

पत्रकारिता (प्रिंट और इलेक्ट्रानिक माध्यम) ने लोगों को यह अवश्य सिखाया है कि अपने बच्चों को पोलियो ड्राप कब पिलाएँ? गरमियों में त्वचा की देखभाल कैसे करें ? पार्टियों में लोगों से किस तरह से मिलें ? कैसे कपड़े पहनें ? कैसे मैकअप करें ? किस चीज की खरीदारी किस मार्केट से करें ? किस नए स्टाइल के कपड़े सिलवाएँ ? कौन सी कार खरीदें ? वजन कम करने के लिए कौन–कौन से विदेशी उपकरणों का उपयोग करें ? कुछ ही हफतों में गंजापन कैसे दूर करें ? यानी इस तरह की शिक्षा, जीवन–शैली में परिवर्तन के तमाम नुस्खे सुधारने में इसकी चुस्त–दुरुस्त भूमिका है।

सारांश रूप में यह बता सकते हैं कि शिक्षा और पत्रकारिता का संबंध शरीर और आत्मा के समान है। प्रिंट और इलेक्ट्रानिक माध्यम के द्वारा शिक्षा का प्रचार–प्रसार होता है। हर आदमी, शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले प्रगति के बारे में जानने के लिए इच्छुक रहते हैं। यह पत्रकारिता से ही सफल होता है। अंत में यह कह सकते हैं कि इस ब्रह्मांड में शिक्षा के क्षेत्र में हर क्षण घटनेवाली घटनाओं और बदलावों पर नजर रखकर, उन्हें अपनी छननी (न्यूज सेंस) से छानकर महत्व की सूचनाओं को इकट्ठा करना, प्रस्तुत करना पत्रकारिता से ही संभव है। पत्रकारिता की तकनीक एवं शैलियाँ अंततः मानव के लिए शिक्षा के प्रचार–प्रसार के हितार्थ ही हैं और इनका प्रयोग सार्थक ढंग से किया जाना अपेक्षित है।

संदर्भ एवं सहायक ग्रंथ सूची ––तृतीय अध्याय

[*1]बी. भट्टाचार्य, दान सागर, पृ.सं.4

[*2]शिक्षा सिद्धान्त एवं आधुनिक भारत की शिक्षा, डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्रा, पृ.सं.5

[*3]बी. भट्टाचार्य, दानसागर, पृ.सं.8

[*4]शिक्षा तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्ध, संतोष कुमार महर्षि, डॉ.राजेन्द्र श्रीमाली,पृ.सं.68

[*5]शिक्षा तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्ध,संतोष कुमार महर्षि, डॉ. राजेन्द्र श्रीमाली,पृ.सं. 21

[*6] पत्रकारिताःदशा एवं दिशा, प्रो.पी के आर्य, पृ.सं.180

❖ अनुवाद और तत्काल भाषांतरण, विमलेश कांति वर्मा, मालती,सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 2009

❖ आधुनिक हिन्दी निबन्ध, डॉ. भुवनेश्वरी चरण सक्सेना, प्रकाशन केन्द्र, लखनाऊ, 1900

❖ पत्रकारिता के नये आयाम, एस.के दुबे,लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

❖ पत्रकारिता और समाज, डॉ. यू. सी. गुप्ता, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली–110002, 2009

❖ पत्रकारिता हेतु लेखन, डॉ. निशांत सिंह, अर्चना पब्लिकेशन, दिल्ली– 110012, 2008

❖ भाषा और प्रौद्योगिकी, डॉ. विनोद कुमार प्रसाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, 2008

❖ भारत में भ्रष्टाचार और उससे मुकाबला संतोष कुमार अग्रवाल, राधा पब्लिकेशन्स, 4231/1, अंसारी रोड, दरियांगज, नई दिल्ली–110002, 2007

❖ मीडिया अनुसंधान, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, 2009

पत्र–पत्रिकाएँ

➢ संचार समन्वय, समन्वय निदेशालय पुलिस बेतार, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली–110003।

➢ वाग्प्रवाह, 'स्वास्तिक' 3/124, विराट खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010।